International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-02-2023, Accepted: 08-03-2023, Published: 23-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 10-13

औद्योगिक इकाइयों में कार्य करने वाली महिलाओं के कार्य जीवन संतुलन पर एक अध्ययन

शालिनी शर्मा[1], अवधेश प्रतापसिंह[2]
[1] शोध छात्रा, अर्थशास्त्र, प्रतापसिंह विश्वविधालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] अर्थशास्त्र, प्रतापसिंह विश्वविधालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। और औद्योगिक प्रगति के बिना आर्थिक विकास भी संभव नहीं होता। औद्योगिकीकरण षब्द अग्रेंजी भाषा के इन्डेस्ट्रियलाइजेषन का हिन्दी रूपान्तरण है। इसका अर्थ है–किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए उद्योगों की स्थापना और विकास आवश्यक है। औद्योगिकीकरण एक सामाजिक और आर्थिक प्रक्रिया है। किसी क्षेत्र विषेष, राज्य या देष के विकास में औद्योगिकीकरण का मुख्य योगदान है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी आर्थिक, भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विषेषताएं होती हैं। जिसमें पाए जाने वाले नाकारात्मक प्रभाव के कारण औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है। इस नकारात्मक प्रभाव को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित करके ही औद्योगिक विकास को गति और दिशा दी जा सकती है। औद्योगिक विकास में फैले नकारात्मक प्रभाव को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित करने के लिए औद्योगिक क्षेत्र के आधारभूत ढॉचें को सुद्धढ़ करना आवष्यक है। इसके लिए सर्वप्रथम आवष्यक है षिक्षा के स्तर को बढ़ाना। क्षेत्र के पिछड़े और मुख्य धारा से कटे हुए लोगों को उचित और रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान कर उन्हें भी आर्थिक विकास में भागीदार बनाना।
किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। और औद्योगिक प्रगति के बिना आर्थिक विकास भी संभव नहीं होता। औद्योगिकीकरण शब्द अग्रेंजी भाषा के इन्डेस्ट्रियलाइजेषन का हिन्दी रूपान्तरण है। इसका अर्थ है–किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए उद्योगों की स्थापना और विकास आवशयक है। औद्योगिकीकरण एक सामाजिक और आर्थिक प्रक्रिया है। किसी क्षेत्र विशेष, राज्य या देश के विकास में औद्योगिकीकरण का मुख्य योगदान है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी आर्थिक, भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विषेषताएं होती हैं। जिसमें पाए जाने वाले नाकारात्मक प्रभाव के कारण औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है। इस नकारात्मक प्रभाव को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित करके ही औद्योगिक विकास को गति और दिशा दी जा सकती है। औद्योगिक विकास में फैले नकारात्मक प्रभाव को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित करने के लिए औद्योगिक क्षेत्र के आधारभूत ढॉचें को सुद्धढ़ करना आवष्यक है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है शिक्षा के स्तर को बढ़ाना। क्षेत्र के पिछड़े और मुख्य धारा से कटे हुए लोगों को उचित और रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान कर उन्हें भी आर्थिक विकास में भागीदार बनाना ।
भारत में अधिकाश आर्थिक क्षेत्र से जुड़ी कामकाजी महिलाएं अपनी नौकरी या रोजगार और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाने में कठिनाई का अनुभव करती हैं। वे अपने घर और काम के बीच संतुलन रखना तो चाहती हैं, किन्तु उनके लिए यह एक बड़ी चुनौती है। अतः प्रत्येक विवाहित और अविवाहित महिला की प्रतिक्रिया पर यह शोधपत्र आधारित है।

मूल शब्दः औद्योगिक विकास, महिलाओं के काम और घरेलू जीवन के बीच संबंध, महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति, महिलाओं की समस्याएं, महिलाओं सशक्तिकरण

महिलाओं को प्रभावी ढंग से कार्य करने और सफल रहने के लिए व्यवसायिक कार्य और घरेलू तथा पारिवारिक क्षेत्र के बीच बेहतर संतुलन की आवशयकता है। एक पुरूष की अपेक्षा एक महिला की घरेलू जिम्मेदारियां अधिक होती हैं। व्यवसायिक कार्य से जुड़ी महिलाओं का दायित्व दोगुना हो जाता है। क्योंकि घर–परिवार, चूल्हा–चौका, आदि से वह मुक्त नहीं हो सकती। इसके कई धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कारण हैं। महिलाओं को अपना घर चलाने और बच्चों की देखभाल करने में परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग मिलता है, किन्तु यह पर्याप्त नहीं है अर्थात् यह स्थिति संतोषजनक नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में हुए षोंधों और मेरे द्वारा की गई रिसर्च में यह ज्ञात हुआ है कि औद्योगिक क्षेत्रों से जुड़ी महिलाओं के घर और व्यवसायिक कार्य के बीच बहुत अधिक असंतुलन की स्थिति हैं । इन महिलाओं का जीवन चुनौतीपूर्ण है। ऐसा पाया गया है कि 100 में से लगभग 10 महिलाएं ही घर और कार्य क्षेत्र में संतुलन स्थापित कर पाती हैं। 90 प्रतिषत महिलाएं कई चुनौतियों का सामना करते हुए जीवन यापन करने को विवष हैं। फिर चाहे वह एकल परिवार हो या फिर संयुक्त परिवार हो। नौकरीपेषा महिलाओं में जहॉ कार्य के घण्टे निर्धारित हैं वहीं व्यवसायिक क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं के कार्य के समय में अनिश्चितता की स्थिति पायी गई है। कहीं–कहीं यह समय–सीमा आठ घण्टे से बढ़ कर बारह घण्टे तक देखी गई है।

औघौगिक क्षेत्र से जुड़ी मध्यमवर्गीय महिलाएं सुशिक्षित होने पर भी झार और कार्य क्षेत्र के बीच कई से घिरी रहती हैं। अपने घर–परिवार की आर्थिक आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटी–छोटी विविध औद्योगिक इकाइयों में काम करना पड़ता है। बड़ी, पापड़, अचार, मसाले, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, और ऐसे ही कई उद्योग हैं जहां से महिलाओं को आर्थिक संबल मिलता है। ये महिलाएं घर–पविार के साथ–साथ व्यवसायिक क्षेत्र से जुड़कर दोहरी भूमिका का निर्वहन बहुत ही जिम्मेदारी के साथ करतीं हैं। वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में बहुत परिवर्तन आया है। पुराने समय में शिक्षा के आभाव के कारण लिंगभेद एक ऐसी समस्या थी जिसने महिलाओं को पुरुषों से बहुत पीछे छोड़ दिया था। किन्तु वर्तमान समय में यह अन्तर एक सीमा तक कम हुआ है जिसके परिणाम स्वरुप औद्योगिक क्षेत्र, व्यवसायिक क्षेत्र और नौकरियों में भी महिलाओं का प्रतिषत् बढ़ा है। यह अच्छी शिक्षा का ही परिणाम है कि महिलाएं आज हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा रहीं है। महिलाएं आज डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, प्रोफेसर, पायलट, सैनिक, आदि क्षेत्रों में अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दे रहीं है। घर के साथ–साथ बाहर की जिम्मेदारी भी इसने अच्छे तरीके से निभाई हैं। यह तो प्रामाणित है कि महिलाऐं अपने कार्यक्षेत्र और परिवार की जिम्मेदारी को कड़ी मेहनत और लगन के साथ निभातीं हैं। इन सभी दायित्वों को पूरा करने में

इन्हें कई बार बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और वे स्वयं को असुरक्षित महसूस करतीं हैं। इसका कारण है कि हमारे देष में आज भी महिलाएं सुरक्षित नहीं है। उनका अकेले बाहर जाना–आना और देर रात तक झार से बाहर रह कर काम करना उसके और उसके झार परिवार के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बना रहता है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई सारे कानून सरकार द्वारा बनाए गए हैं। ताकि वे सुरक्षित महसूस कर सकें और बिना किसी भग्य के ओवन में आगे बढ़ सकें। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है, उन्हें शिक्षित करना और उपको उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करना। जैसे–बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा के प्रति उनमें चेतना उत्पन्न करना।

आज महिलाएं तेजी से आत्मनिर्भर होने की दिशा में कदम बढ़ा रहीं हैं। महिलाओं के आत्मनिर्भर हो का ग्राफ तेजी से ऊपर उठ रहा है। ये अपने जीवन की हर भूमिका निभाने में सफल भी हो रहीं हैं। ये अपने दायित्वा और कर्तव्यों अच्छे तरीके से जानती और समझती है।

सतना जिला–संक्षिप्त परिचय

सतना क्षेत्र का प्राचीन और बघेलखण्ड क्षेत्र का अधिकांष भाग कलचुरियों और मोर्य वषं के षासन काल में वापस खोजा जा सकता है। प्राचीन काल में सतना क्षेत्र मे अन्य साम्राज्य भी थे। लेकिन ये दोनों साम्राज्य अपने आष्चर्यजनक गौरवशाली अतीत के लिए स्पष्ट रुप से खड़े रहे। यहॉ भरहुत षहर में मिली बौद्व मूर्तियों और अवषेषों का उल्लेख करना उचित है। माना जाता है कि इन मूर्तियों अवषेषों का निर्माण राजा अषोक के जीवन काल में किया गया था। आज के बौद्व ग्रंथ, मूर्तियों और अवषेष सतना षहर के प्राचीन इतिहास का जीता–जागता प्रमाण हैं। सतना के पर्यटक क्षेत्र होने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

सतना भारत के दो गौरवशाली कालखण्डों से भी जुड़ा है। एक रामायण काल और दूसरा भहाभारत काल। इसी कारण इसे पवित्र और धार्मिक क्षेत्र के रुप में जाना जाता है। यही कारण है कि देष–विदेष के कोने–कोने से लाखों पर्यटक आकर्षित होकर यहॉ आते हैं और सतना के आर्थिक विकास में योगदान देते हैं।

साक्ष्य का अवलोकन

प्रस्तुत षोधपत्र को अधिक तार्किक और स्पष्ट बनाने के लिए अनेक विद्ववानों क आर्थिक दृष्टिकोण और साहित्य का अवलोकन किया गया है। औद्योगिक इकाइयों में महिलाओं के कार्य जीवन संतुलन से संबधित कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।. कारवर आर. एम. एण्ड पेज़ (1985), सी. एच. सोसायटी (1985), वोहरा आषारानी (1986), आहूजा राम (2001), कपूर प्रमिला (1970), देसाई नीरा (1982), सिंह वी. एन. (2012), आहूजा राम (1998), मोदी ईष्वर (2012), दवे दीपिका (2014)। कुमार राधा (2002), टी. एस. पपोला (1982), के. सांरादामिनी (1985), प्रमिला कपूर, नीरा देसाई आदि द्वारा कार्योजन..... में आने वाली महिलाओं के कार्योजन में आने से संबधित विवरण दिया गया हैं। एल. दुबे एवं आर पटरीवारा (1990) ने कार्यरत महिलाओं के परिवार की संरचना का और परिवार का इन महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण से संबधित विवेचन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कामकाज़ी महिलाओं की व्यावसायिक संतुष्टि विषयक तथ्यों का विशलेषण करना।
2. कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका निभाने के कारण उत्पन्न अर्न्तद्वन्द की स्थिति को ज्ञात करना।
3. सतना जिले के उद्योंगों में कार्य करने वाली महिलाओं की स्थिति को ज्ञात करना।
4. महिला/पुरुष के श्रम सहभागिता के अंतर को ज्ञात करना।
5. पुरुष एवं महिलाओं के कार्य जीवन संतुलन के अंतर का पता लगाना।

शोधपत्र का प्रारुप

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन में अन्वेशणात्मक एवं व्याख्यातमक षोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन सतना जिले के उद्योग में कार्य करने वाली महिलाओं के कार्यजीवन संतुलन अध्ययन, साक्षात्कार, अनुसूची द्वारा किया गया है।

विविध स्त्रोतों से प्राप्त किए गए ऑकड़ो को तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

विश्लेषण

पारिवारिक संरचना एवं परिस्थिति संतुलन

तालिका 1: कामकाजी महिलाओं के परिवार का स्वरुप

01	परिवार का स्वरुप	उत्तरदाता	प्रतिशत्
02	संयुक्त परिवार	20	40
03	एकल परिवार	30	60
04	योग	50	100

तालिका क्रमॉक 1 से ज्ञात होता है कि परिवार के स्वरुप से संबंधित मान्यता के अनुसार अधिकांष महिलाएं एकल परिवार से संबंधित होती हैं जबकि लगभग चालीस प्रतिशत् महिलाएं संयुक्त परिवार से जुड़ी होती हैं। उक्त तालिका द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्यतः कार्यरत महिलाएं संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार से संबंधित होती हैं।

तालिका 2: कार्यरत होने वाली महिलाओं के उत्तरदायी कारण

01	उत्तरदायी कारण	उत्तरदाता	प्रतिशत्
02	घर की स्थिति को सुद्धढ़ बनाने के लिए	25	55
03	आत्मनिर्भर होने के लिए	10	15
04	अपनी शिक्षा का उपयोग करने के लिए	15	30
05	योग	50	100

तालिका क्रमॉक 2 से ज्ञात होता है कि अधिकांष महिलाएं (लगभग 55 प्रतिशत् महिलाएं) घर की स्थिति को सुद्धढ़ बनाने के लिए, 15 प्रतिशत् महिलाएं आत्मनिर्भर बनने के लिए और 30 प्रतिशत् महिलाएं अपनी शिक्षा को उपयोगी बनाने के लिए कार्यरत होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में महिलाओं के कार्य जीवन संतुलन में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा कामकाजी महिलाओं का परिवार का स्वरुप किस प्रकार का होता है? और महिलाओं के व्यावसायिक होने में, कार्यरत होने का कारण क्या हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर खाजने का प्रयास किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया है कि महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या दोहरी जिम्मेदारी का होना है। महिलाओं के व्यवसाय ने उनके उत्तरदायित्व को बढ़ा दिया है और साथ ही उनके घर–परिवार की जिम्मेंदारियों में भी कोई कमीं नहीं की गई है। अर्थात् महिलाओं को घर और बाहर दोहरी जिम्मेंदारियों को निभाना पड़ता है। यही कारण है कि वे बड़े संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करतीं हैं और एकल परिवार को प्राथमिकता देती हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज के परिवेश और परिस्थिति को देखते हुए महिलाओं का व्यवसायिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करना अनिचार्य हो गया हैं। इस दिशा में महिलाओं ने तेजी से अपने कदम भी बढ़ाए हैं और पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। भारत के सामसजिक, आर्थिक परिवेश में महिलाओं को उचित व्यवसायिक वातावरण उपलब्ध नहीं हो पाता हैं, अतः महिलाओं को समान कार्य करने, समान लाभ प्रदाय करने और सुरक्षा प्रदान करने की व्यवहारिक योजनाएं बनाने की आवष्यकता है। कामकाजी महिलाओं की सिथिति में गुणात्मक सुधार करने का प्रयास किया जाना चाहिए। सार्वजनिक और निजी प्रतिष्ठानों में महलिाओं की सुरक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।

औद्योगिक क्षेत्र/इकाइयों में महिलाओं की स्थिति पर एक अध्ययन सतना जिले के सन्दर्भ में।

प्रस्तावना

अर्थव्यवस्था का विकास एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है क्योंकि यह अनेक प्रकार के भौतिक और मानवीय घटकों के अन्तरसंबंधों एवं व्यवहारों का परिणाम है। किसी भी देष के विकास के लिए तीन महत्वपूर्ण साधनों का होना आवष्यक होता है। मानव, माल, मशीन। श्रम उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है साथ ही साथ यह सक्रिय साधन भी है। श्रम सहभागिता दर का अभिप्राय है–भारतीय जनगणनाओं में देश की कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या के अनुपात से है। इस आधार पर कृषि क्षेत्र (प्राथमिक क्षेत्र) औधौगिक क्षेत्र (द्वितीयक क्षेत्र) एवं सेवा क्षेत्र (तृतीयक क्षेत्र) में पुरुष और महिलाओं की जनसंख्या के अनुपात से है। वर्तमान समय में महिलाओं की आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि हुई है। यूरोप तथा अन्य विकसित देषों में औद्योगिक क्षेत्रों मे महिलाओं की भागीदारी दर अपेक्षकृत ऊँची है। सकल घरेलू उत्पात (जी. ड़ी. पी.) में महिलाओं का हिस्सा विकसित देषों में चालीस (40) प्रतिषत् है अल्पविकसित देशों में भी महिला श्रम परुषों की तुलना में बहुत पीछे नहीं है।

यह सर्वविदित है कि हमारे देश की कुल जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा महिलाएं हैं। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को स्वीकारा गया है, क्योकि महिला और पुरुष जीवन और विकास की गाड़ी के दो पहिए हैं। महिलाएं भी राष्ट्र के विकास के विविध आयामों में उतना ही महत्व रखती है, जितना कि परुष रखता है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए देष की आधारभूत संरचना का विकास भी आवश्यक है। भारत जैसे विशाल देश के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत की भौगोलिक और पर्यावरणीय क्षेत्र के चहुंमुखी विकास की असवष्यकता है। जिससे क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर आर्थिक विकास को गति मिल सके।

मध्य प्रदेष आर्थिक विविधताओं वाला राज्य है। यहॉ के वन, पर्वतीय क्षेत्र और कृषि क्षेत्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मध्य प्रदेश में कुल श्रम सहभागिता दर जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 46.46 प्रतिशत् मानी गई है। जिसमें परुष श्रमिकों की भागीदारी दर–52 प्रतिशत् तथा महिला की श्रमिक भागीदारी की दर–41 प्रतिशत् मानी गई है। यह मध्य प्रदेष की श्रमिक भागीदारी (29.6) से कहीं अधिक है।

औधोगिक क्षेत्र में भागीदारी देने वाले लोगों में अधिक संख्या पुरुषों की ही नजर आती है। तथा महिलाओं की उपस्थिति कम नजर आती है। औधोगिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी कितनी है? उनकी पारिवरिक और सामाजिक स्थिति कैसी है? जैसी है उसका कारण क्या है? उनकी समस्याएं कौन–कौन सी हैं? जो महिलाएं उद्योग से जुड़ी हैं उनको किन–किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? उनकी उपलब्धियॉ कया–क्या है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास इस शोधपत्र में किया गया है। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर इस षोध–पत्र में खोजने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

औद्योगिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति, महिलाओं की सहभागिता, महिलाओं की उपस्थिति और औद्योगिक विकास।

शोध–क्षेत्र सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला मध्य प्रदेष में स्थित एक जिला है। इसका मुख्यालय सतना में ही स्थित है। यह रीवा संभाग के अंर्तगत आता है। इसकी सीमा उत्तर में उत्तर प्रदेष के बॉदा षहर से लगी हुई है। पूर्व में यह रीवा जिले के तेवर, सिरमौर और हुजूर तहसील से तथा सीधी जिले के गोपद बनास तहसील को स्पर्ष करता है। जिले की संपूर्ण पष्चिम सीमा पन्ना जिले से लगी हुई है। मध्य प्रदेष के पूर्वोत्तर भाग में स्थिति सतना एक प्राचीन षहर है, जो अपने एतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस प्राचीन षहर की यात्रा आपको भारतीय अतीत की तरफ ले जाएगी। जहॉ आप इतिहास से जुड़ी कई संरचनाओं को देख पाएंगे। सतना का इतिहास कई हजार साल पुराना बताया जाता है। इस क्षेत्र का संबंध महाभारत काल से भी रहा है। यहॉ भारत नाम का एक गॉव है, जहॉ बौद्ध धर्म से जुड़े साक्ष्य प्राप्त किए गए हैं। 1873 में पुरातात्विक सर्वेक्षण के दौरान यहॉ बौद्ध स्तूप की खोज की गई। इतिहास से जुड़े साक्ष्य बताते हैं कि यहॉ कई षक्तिषाली सम्राटों काषासन रहा है। सतना अंग्रेजों के प्रभाव क्षेत्र में भी रहा है। यहॉ पर सतना नाम की एक बड़ी नदी बहती है, इसी कारण इस शहर का नाम सतना पड़ा। माना जाता है कि रामायण काल में भगवान राम का आगमनसतना शहर के चित्रकूट नामक स्थान पर हुआ था। इससे यह सिद्ध होता है कि यह एक प्राचीन स्थल है। पर्यटन की दृष्टि से भी सतना बहुत समृद्ध शहर है। कई दर्षनीय और धार्मिक स्थलों से यह शहर भरा हुआ है। यहॉ चित्रकूट धाम, मैहर में मॉ षारदा मंदिर, रामवन, बौद्ध स्थल बिड़ला मंदिर आदि कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थल आकर्षण का केन्द्र है। यहॉ साल भर पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है। आध्यात्मिक और मानसिक षान्ति के लिए चित्रकूट पूरे भारत में प्रसिद्ध है। श्री राम के जीवन से जुड़ी बहुत सी स्मृतियॉ यहॉ सुरक्षित हैं। भरत मिलाप मंदिर, चित्रकूट जल प्रपात, मंदाकिनी घाट, जानकी कुण्ड, गुप्त गोदावरी, हनुमान धरा, आदि स्थलों के कारण सतना एक प्रसिद्ध शहर है।

सतना शहर इसी कारण आर्थिक दृष्टि से भी बहुत महत्व का है। पर्यटन से संबधित कई तरह की ओद्योगिक इकाइयॉ यहॉ विकसित हैं। लघु उद्योग, कुटीर उद्योग और वृहद उद्योग सभी का विकास सतना षहर में नजर आता है। भविष्य में भी यहॉ विविध प्रकार के औद्योगिक विकास की असीम संभावनाएं नजर आती हैं। सतना जिले के विकास में पर्यटन क्षेत्र की और देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

साहित्य का अवलोकन

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को अधिक स्पष्ट और तार्किक बनाने के लिए अनेक विद्धानों के आर्थिक द्रष्टिकोण, विचारधारा और साहितय का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के अंर्तगत औद्योगिक विकास और महिलाओं की आर्थिक स्थितियों से संबंधित अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

योजना आयोग (1951), गाडगिल ड़ी. आर., (1951) ओझा पुण्यदेव (1956) मिश्रा ओ.पी., सहाय, एस. के., पाण्डेय यू. के., (1957), भगवानदास रेड्डी वी. (1988) सिंह विद्यासागर (1988) मैयती, प्रदीप एवं राव कविता (1995) श्रीनिवास पी.वी. (1995) सारथी और नीरू आचार्य (1995) मोहन राव जे. (1996) चन्द्रषेंखर सी.पी. (1996), कुंवर पारितोष (1998) शैली मजूमदार (1999) गिरीष बाबू (2001) चतुर्वेदी रावेन्द्र कुमार, (2001) गुप्त प्रदीप (2002) वर्मा धर्मेष कुमार (2002), सिंह नीना (2002) आदि लेखकों के महिलाओं के औद्योगिक क्षेत्र में स्थिति, उपस्थिति और औद्योगिक विकास आदि विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देष्य

1. महिला/पुरुष के श्रम सहभागिता दर के को ज्ञात करना।
2. महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति में होने वाले परिवर्तनों।
3. महिला उद्यमियो की सामाजिक स्थितियों और समस्याओं का अध्ययन करना।
4. मध्य प्रदेष मे (1960–61) से (2000–2001) की जनगणना दषकों की श्रम की सहभागिता दर को ज्ञात करना।
5. श्रम सहभागिता की दर के परिवर्तन का अध्ययन करना मध्य प्रदेश के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में)
6. यह अध्ययन करना कि, महिला/पुरुष के स्वास्थ्य पर इस परिवेश का क्या प्रभाव पड़ता है

शोध परिकल्पना

1. महिलाओं की कार्य सहभागिता कृषि क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं की कार्य सहभागिता पुरुषों से अधिक पाई जाती है।
3. महिला उद्यमियों की संख्या लघु–उद्योगों में पुरुष उद्यमियों से अधिक पायी जाती है।
4. महिला श्रमषक्ति लघु–उद्योगों में पुरुष उद्यमियों से अधिक पायी जाती है।
5. प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक, सभी क्षेत्रों में श्रमिक, साक्षरता, श्रम सहभागिता एवं गैर कृषि क्षेत्रों में श्रमिकों में सहसंबंध है जो एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

विभिन्न स्त्रोतो से प्राप्त जानकारी और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर उपरोक्त शोध–पत्र की रचना की गई है।

शोध सीमाएं

1. व्यवसाय के आय–व्यय के विवरण संबंधी जानकारी प्राप्त करने में समस्या का सामना करना।
2. पुरुष एवं महिलाओं के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ उद्योगों का पंजीयन महिलाओं के नाम पर होने के पश्चात् उनका संचालन उनके परिवार के पुरुषों द्वारा किया जामा है। इसके परिणाम स्वरूप उत्तरदाताओं द्वारा दी गई जानकारी से सही ऑकड़े नहीं मिल पाते। यह एक गंभीर समस्या है।
3. उद्यमियों की पारिवारिक संबंधों को ज्ञात करने में भी जटिलता का सामना करना पड़ता है।
4. उद्यमियों के व्यवसाय, आय–व्यय संबंधी विवरण की जानकारी प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
5. प्रश्नावली बनाने तथा प्रष्नों का निर्धारण करने में कई प्रकार की समस्यओं का सामना करना पड़ता है।

शोधपत्र प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र की प्रविधि मौलिक एवं व्यवहारिक है। इस षोधपत्र में औद्योगिक

क्षेत्र/इकाइयो में महिलाओं स्थिति एवं उपस्थिति का अध्ययन किया गया है।

(सतना जिले के सन्दर्भ में) अध्ययन में जिस शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है–वह निम्नलिखित रुप से तैयार की गई है।

अध्ययन में क्षेत्र निदर्षन विधि से चयनित इकाइयों को मध्य प्रदेष के सतना जिले के अध्ययन हेतु चुना गया है। अध्ययन के समग्र में लघु, कुटीर एवं वृहद उद्योगों में कार्यरत महिला कर्मचारियों को केन्द्र में रखा गया है। चुने गए उद्योगों का विवरण निम्नलिखित है–

शोध क्षेत्र से संबंधित उद्योग ––––– उत्तरदाताओं की संख्या

लघु उद्योग

तालिका 3

1.	**दाल मिल उद्योग**		———	**पचास**	**–– (50)**
2.	पापड़ और अचार	उद्योग	————	पचास	–– (50)

कुटीर उद्योग

1. बीड़ी उद्योग ––––– पचास –– (50)
2. बॉस टोकनी उद्योग ––––– पचास –– (50)

वृहद उद्योग

1. सीमेन्ट उद्योग ––––– सौ (100)

शोध प्रविधि में कुल चयनित इकाइयॉ–300 हैं। इसी चयनित इकाइयों के आधार पर यह शोध–पत्र आधारित है।

सरांश

प्रस्तुत शोध प्रविधि का सारांष यह है कि, अर्थव्यवस्था का विकास करने के लिए देश की अर्थव्यवस्था को विश्व स्तर तक विकसित करने की आवश्यकता है अर्थात् आधुनिक युग की उत्तरोत्तर मॉग आधुनिकीकरण है। देशवासियों का उच्च जीवन–स्तर औधैगिक क्षेत्र के विकास द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी देश के लिए अपनी मजबूती को अंर्तराष्ट्रीय मंच पर सुदृढ़ करने के लिए आधुनिकीकरण अतिआवश्यक है। आर्थिक क्षेत्र की उस स्थिति का नाम औद्योगिकीकरण है जिसमें छोटे–छोटे उद्योग–धंधों के स्थान पर बड़े–बड़े कल–कारखाने विकसित करना अनिवार्य हैं। औद्योगिकीकरण के कारण शहरीकरण को बढ़ावा मिलता है और मानव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार आता है। अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिशिचत की जाना चाहिए। महिलाओं की श्रम सहभागिता के बढ़ते प्रतिशत् के साथ–साथ अर्थव्यवस्था का विकास भी निश्चित रूप से गतिमान होगा।

निशकर्ष

ग्रामीण अंचल में रोजगार प्राप्त करने वाली महिलाओं की सहभागिता कम है। जनगणना I61 में भारत में कुल कियाशील जनसख्या में 59.4 मिलियन अर्थात् श्रम सहभागिता की दर महिलाओं में 31.5 प्रतिषत् रही है। परन्तु सेवा क्षेत्र में स्त्रियों को रोजगार उपलब्ध है। महिलाओं की रोजगार में कमी का कारण सामाजिक रीति–रिवाज, संसाधनों की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण तथा ज्ञान में कमी मुख्य कारण है। आर्थिक रुप से महिलाओं को सुद्धढ़ करने के लिए, अंर्तराष्ट्रीय श्रम संगठन को मजबूत के लिए, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए, अनेक सुझाव दिए जाते हैं। जिसके अंर्तगत सामान्य कार्य के लिए सामान्य मजदूरी एवं आर्थिक क्षेत्र में सामान्य रूप से महिलाओं की सहभागिता हेतु अंर्तराष्ट्रीय सहयोग का आहवान किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. kamal Nath. “Women in the working Force in India” Economics and Political Weekly, 1968:3(31):1205.
2. Meher MR. “Problen of Women Imtloyment” Indian Journal of Social Work, 1971, 32(2).
3. Leela Gulaty. “Female Work Participayion-A Study of Inter State Differences” Economic and Political Weekly,1975:10(182):35.
4. Shree Lekha Bask (1979)- “Role of Women In Ranal Economic- Development” Yojana, 1979.
5. Narasimha Reddy D. “Female Work Participayion-A Study of Inter State Differences” Economic and Political Weekly,1975:10:185.
6. गिरीष बाबू, ‘‘भारत में लोहा एवं स्पात् उद्योग की लाभदायकता का विषलेषण’’
7. (टाटा आयरन एण्ड स्टील कं. लि. एवं भारतीय स्पात् प्राधिकरण लिमिटेड के संदर्भ में)–वर्ष 2001
8. रंजन नवनीत 2011 ‘‘गॉवों में षहरों जैसी सुविधा का विस्तार’’ वर्ष 2011 पृष्ठ–20–25।
9. वर्मा धर्मेष कुमार ‘‘मथुरा जनपद के ईट भट्टा उद्योग में लागत–लाभ का विषलेषणात्मक अध्ययन’’ वर्ष 2002।
10. यादव षम्भूनाथ ‘‘खेती एवं किसानों का हितैषी बाजार वर्ष 2011 पृष्ठ– 20–25’’। 10– रितु मैनन ‘‘कर्मठ महिलाएं नेषनल बुक ट्रस्ट ईडिया वर्ष 2007 पृष्ठ–11–12।